International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 06-06-2021, Accepted: 20-06-2021, Published: 06-07-2021
Volume 7, Issue 4, 2021, Page No. 16-18

मुंशी प्रेमचंद की पारिवारिक कहानियों में हास्य और व्यंग्य

रेखा कुमारी
शोधकर्त्री, रिमट विश्वविद्यालय, मंडी गोविन्द, गढ़, फतेहगढ़ साहेब, पंजाब, भारत

सारांश
महान कथाकार मुंशी प्रेमचन्द ने भारतीय जीवन के सभी पक्षों के विविध रूपों को विविध परिदृश्यों के माध्यम से चित्रण कर कथा साहित्य को समृद्ध किया है । उन्होंने अपनी पारिवारिक कहानियों में समाज के उपेक्षित वर्ग किसान, मजदूर, हरिजन और नारियों के प्रति अपनी गहरी सहानुभूति को छिपाया नहीं, अपितु उसे अपनी सशक्त लेखनी से समाज के समक्ष उनके यर्थाथ को चित्रित किया है । पारिवारिक कहानियों में अनमेल विवाह, विधवा विवाह, बाल विवाह, नारियों का मान-सम्मान एवं उनकी सुरक्षा, वेश्यावृति, दलित विमर्श, कृषक, जमींदारी प्रथा, सामान्तवाद, शासन-व्यवस्था आदि का पारिवारिक परिप्रेक्ष्य पर पड़ने वाले प्रत्यक्ष एवं परोक्ष प्रभावों को उकेरा है । और एक नये समाज में नये पारिवारिक परिवेश की कल्पना की है । उन्होंने परिवार में फैली कुरीतियों और विकृतियों का सजीव चित्रण कर समाज को नयी राह दिखाई है ।

मूल शब्द: गुल्ली-डंडा, अंग्रेजीदा, लोट-पोट, अमीराना, चोचलों, गुंजाइश, अलग्योझा, झंझोर, सानी, मंजता, छाती फाड़कर, रईसजादा, उकेरा, बेसमझ, फुलौडियाँ, अम्मा, छूत-अछूत, शोहर, विमाता, झांकी, गोबर, डाका, ताली बजाना इत्यादि

प्रस्तावना

वर्तमान युग की भौतिकता का चकाचौंध और उपभोक्तावादी प्रवृत्ति ने पारिवारिक रिश्तों को कृत्रिमता एवं जीवन की नीरसता से परिपूर्ण कर दिया है। जिसके परिणाम स्वरुप पारिवारिक जीवन एक मजबूरी, लाचारी और विवशता बनकर रह गया है। महान कथाकार मुंशी प्रेमचंद ने अपनी पैनी दृष्टिसे अलग-अलग हमारे समक्ष रखा है । जिसमें बड़े घर की बेटी, नशा, शतरंज के खिलाड़ी, घर जँवाई, गुप्त धन, बेटों वाली विधवा, पूर्व संस्कार,अल्मांसा, विमाता तथा पंच परमेश्वर आदि प्रमुख हैं । साहित्यकार जिस समाज में रहता है, उस समाज का चित्रण उसकी रचनाओं में होना स्वाभाविक है । वह समाज में व्याप्त कुरीतियों और कुप्रथाओं का विरोधी होता है । इंद्रनाथ चौधरी कहते हैं, “प्रेमचंद ने जिस समाज में जन्म लिया था, जहां उन्होंने साँस ली,आंखें खोली, जिसके दर्द और बेचैनी को भोगा और जिससे टक्कर ली, उस समाज पर गुस्से या झुन्झलाहट से कुछ नहीं होगा, उसका उन्हें पूरा एहसास था । इसलिए उन्होंने उस समाज से बाकायदा की जंग की ओर ज़िन्दगी के आखिरी दम तक सामाजिक विषमताओं, असंगतियों और विकृतियों का पर्दाफाश किया|”[1] प्रेमचंद भारतीयता के प्रेमी हैं तथा पश्चिमी रहन-सहन के विरोधी हैं। गौतम सचदेव कहते हैं- “यहीं मेरी मातृभूमि है, में

उन्होंने पश्चिमीकरण के कारण भारतीय वेष-विन्यास, स्वास्थ्य के प्राकृतिक नियमों और दया, सहानुभूति, आतिथ्य-सेवा आदि सद्गुणों के लुप्त हो जाने पर दु:ख प्रकट किया है और भारत की पहचान करने वाली अवशिष्ट धार्मिकता की प्रशंसा की ।"[2]

भारतीय सरलता, सादगी और देशीपन प्रेमचन्दजी को प्रिय है | गांवों के प्रति उनका आकर्षण कुछ कहानियों में दृष्टव्य है । `गुल्ली-डंडा` में वे देशी खेलों को गरीब भारत के लिए आर्थिक दृष्टि से उचित मानते हैं-क्योंकि यह बहुत सस्ता खेल है- "हमारे अंग्रेजी दा दोस्त माने या न माने मैं तो यही कहूंगा कि गुल्ली-डंडा सब खेलों का राजा है | अब कभी कभी लड़कों को गुल्ली-डंडा खेलते देखता हूँ, तो जी लोटपोट हो जाता है कि इनके साथ जाकर खेलने लगूं | पर हम अंग्रेजी चीज़ों के पीछे ऐसे दीवाने हो रहे हैं कि अपनी सभी चीजों से अरुचि हो रही है ।" [3] प्रेमचंद ने ग्रामीण अंचल और परिवेश के साथ देशी खेलों का सजीव वर्णन कर जीवन्तता प्रदान की है। कहानी को पारिवारिक पटापेच प्रदान किया है । वह प्रात: घर से निकल जाना, वह पेड़ पर चढ़कर टहनियां काटना और गुल्ली-डंडे बनाना, वह उत्साह, वह लगन, वह खिलाड़ियों के जमघट,वह पढ़ना और पढ़ाना, वह लड़ाई-झगड़े, वह सरल स्वभाव, जिसमें छूत-अछूत, अमीर-गरीब का बिलकुल भेद नहीं रहता था,जिसमें अमीराना चोचलों के प्रदर्शन की, अभिमान की गुंजाइश ही न थी ।"[4]

ग्रामीण का इतना सुंदर पारिवारिक परिवेश था जहां मानव मन में द्वेष भावना का लेशमात्र भी दृष्टिगोचर नहीं होता था । सभी मिलजुलकर खेलते, बाते करते, खाते-पीते, खूब मौज-मस्ती करते थे । ऐसे ही वातावरण की कहानी "अलग्योझा" में देशी खेलों का चित्रण हुआ है जिसमें ग्रामीण जीवन की सजीव झांकी प्रस्तुत की गई है। भोला महतो की पहली पत्नी मर जाने पर दूसरी सगाई करने पर उसके लड़के रग्घू के बुरे दिन आ गए । सौतेली माँ के व्यवहार का मार्मिक पारिवारिक चित्रण कर प्रेमचंद ने को हृदय झंझोर डाला है - "गोबर रग्घू निकालता, भैंसों को सानी रग्घू डालता | रग्घू ही झूठे बर्तन मांजता । भोला की आँखें कुछ ऐसी फिरी कि उसे अब रग्घू में सब बुराइयां ही बुराइयां नज़र आती ।"[5] कहानी की मुलिया, रग्घू की दूसरी पत्नी का पन्ना पर व्यंग्य-"मेरा शोहर छाती फाड़ कर काम करें और पन्ना रानी बैठी रहे, उसके लड़के रईसजादे बने घूमें ।"[6] एकदिन पन्ना ने महुए का सुखावन डाला । बरसात शुरू हो गई थी | मुलिया से बोली-"बहू ज़रा देखती रहना मैं तालाब में नहा आऊँ ।"[7]

"ज्योति कहानी में परिवार के आपसी कलह को बखूबी उकेरा है जिसमें घर-आँगन का एक दृश्य बन पडा है ।"[8]

"तू आज से यही आँगन में सोया कर और गाय भैसे यही पडी रहेंगी ।"

"पडी रहने दे कोई डाका नहीं पड जाता ।"

"मुझपर तुझे इतना संदेह है ।"

"हाँ ।"

"तो मैं यहाँ नहीं सोऊँगा ।"

"तो निकल जा मेरे घर से ।"

"हाँ । तेरी यही इच्छा है तो निकल जाउंगा ।"

सभी परिवार के संस्कारों का परिचय देते प्रेमचंद ने "बड़े घर की बेटी" कहानी में बनी माधव से कहलवाया है - " बेटा ! बुद्धिमान मूर्खों की बात पर ध्यान नहीं देते । वह बेसमझ लड़का है । उससे जो भूल हुई, उसे तुम बड़े होकर क्षमा करोगे ।"[9] प्रेमचंदयुग में घर की बात को घर में ही सुलह करने की परम्परा थी -"बेनी माधव सिंह पुराने आदमी थे । इन भावों को ताड़ गये । उन्होंने निश्चय किया, कुछ भी हो, इस द्रोहियों को ताली बजाने का अवसर न दूंगा। तुरंत कोमल शब्दों में बोले- बेटा! मैं तुमसे बाहर नहीं हूँ।

तुम्हारा जो जी चाहे करो, अब तो लड़के से अपराध हो गया ।"[10]

`विमाता' कहानी में पुनर्विवाह की कहानी है । ज्वाला सिंह का विमाता की ममता पर संदेह है कि अम्बा सहृदयता और स्नेह की वह देवी नहीं है, जिसकी सराहना की जाये किन्तु सब इसके विपरीत है । जब वह घर पहूंचता है तो अम्बा ने दौड़कर मोनू को गोदी में ले लिया और प्यार से कोमल स्वर में बोली-"आज तुम देर तक यहाँ घूमते रहें? चलो, देखो, मैंने तुम्हारे लिए कैसी अच्छी अच्छी फुलौडियाँ बनाई है ।"[11] प्रेमचंद ने बाल मनोविज्ञान का बहुत मार्मिक चित्र `विमाता` कहानी में किया है-"जी नहीं वह मुझे प्यार करती है इसी कारण मुझे बारम्बार रोना आता है | मेरी अम्मा मुझे अत्यंत प्यार करती थी । वह मुझे छोड़कर चली गई । नई अम्मा उससे भी अधिक प्यार करती है । इसलिए मुझे लगता है कि उसकी तरह यह भीमुझे छोड़कर न चली जाए ।"[12] निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि मुंशी प्रेमचंद ने अपनी कहानियों के माध्यम से पारिवारिक परिवेश के सजीव चित्रण को इस खूबसूरती से चित्रित किया है जो परिवार में उत्पन्न होने वाली समस्त प्रकार की अच्छाइयों एवं बुराइयों को प्रतिबिंबित अपनी प्रेरणादायी छाप मानवहृदय पर अंकित कर उसे गुमराह होने से बचाती है । प्रेमचंद ने अपनी पारिवारिक कहानियों में हास्य-व्यंग्य का असाधारण परन्तु सरल स्वाभाविकता से परिपूर्ण जो सम्पुट डाला है उसने मनोवैज्ञानिक ढंग से बड़ी सूक्ष्मतासे अपनी छाप छोडी है । निश्चय ही प्रेमचंद जी ने अपनी पारिवारिक कहानियों के द्वारा व्यंग्य को सशक्त एवं प्रेरणादायी रूप में अभिव्यक्त कर स्वयं को स्वयं सिद्ध किया है। जिसकी अन्य से तुलना नहीं की जा सकती| उन्होंने परिवार के समस्त आयामों को बेहद खूबसूरत ढंग से चित्रित किया है ।

सन्दर्भ सूची

1. चौधरी इन्द्रनाथ- प्रेमचंद कथा-साहित्य में समाज, इन्द्रप्रस्थ भारती- जुलाई-सितम्बर 2007, - पृ.12
2. चौधरी इन्द्रनाथ- प्रेमचंद कथा-साहित्य में समाज, इन्द्रप्रस्थ भारती- जुलाई-सितम्बर2007, - पृ.12
3. सम्पादक कान्ति प्रसाद शर्मा-प्रेमचंद की सम्पूर्ण कहानियाँ खण्ड कहानिया-पांच-गुल्ली-डंडा कहानी- पृ.155
4. सम्पादक कान्ति प्रसाद शर्मा-प्रेमचंद की सम्पूर्ण कहानियाँ खण्ड कहानिया-पांच-गुल्ली-डंडा कहानी- पृ. 156
5. सम्पादक कान्ति प्रसाद शर्मा-प्रेमचंद की सम्पूर्ण कहानियाँ खण्ड कहानिया-चार -अलग्योझा कहानी- पृ.265
6. सम्पादक कान्ति प्रसाद शर्मा-प्रेमचंद की सम्पूर्ण कहानियाँ खण्ड कहानिया-चार-अलग्योझा कहानी- पृ.268
7. सम्पादक कान्ति प्रसाद शर्मा-प्रेमचंद की सम्पूर्ण कहानियाँ खण्ड कहानिया-चार-अलग्योझा कहानी- पृ. 269
8. सम्पादक कान्ति प्रसाद शर्मा-प्रेमचंद की सम्पूर्ण कहानियाँ खण्ड कहानिया-पांच-ज्योति कहानी- पृ. 189
9. सम्पादक कान्ति प्रसाद शर्मा-प्रेमचंद की सम्पूर्ण कहानियाँ खण्ड कहानिया-एक -बड़े घर की बेटी कहानी- पृ. 111
10. सम्पादक कान्ति प्रसाद शर्मा-प्रेमचंद की सम्पूर्ण कहानियाँ खण्ड कहानिया-एक -बड़े घर की बेटी कहानी- पृ. 111
11. सम्पादक कान्ति प्रसाद शर्मा-प्रेमचंद की सम्पूर्ण कहानियाँ खण्ड कहानिया-एक -विमाता कहानी- पृ.149
12. सम्पादक कान्ति प्रसाद शर्मा-प्रेमचंद की सम्पूर्ण कहानियाँ खण्ड कहानिया-एक- विमाता कहानी- पृ. 150